

DPN 6267

Title : कौमारी अर्चन विधि KAUMĀRĪ ARCCANA VIDHI

Run. No. 6958

Cat. No. 52

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29.5 x 11

Folios 2
(5-6)

Lines (in a page) 11

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor जौरीशङ्कर / राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 842

Ruler / place Gauri Shankar .

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Rajendra Shrestha

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ △
ॐ कौमार्यै नमः ॥ प्रथमतः गुरुस्मरणं ॥ सें ५ अखण्ड मण्डलाकारमित्यादि ॥ सें ५ श्रीगुरु
पादुकाभ्यां नमः ॥ इति कृत्वा ॥ ततो न्यासः ॥

△ इति श्री पश्चिमजेष्ठ आम्नाय कौमारी अर्चन विधिः समाप्तः ॥ ॥ संवत् १४२
पौष शुक्ल अष्टमी शुक्रवार १६ कुन्हु वंतागृह निवासिक श्री भवानी शङ्करस्य
पुत्र श्री गौरी शङ्कररा. १६ कौमारी पूजा अर्चन चोया-जुरो ॥ शुद्ध अशुद्ध
पण्डितपितृस्के क्षमा ॥ श्री ३ कौमारी प्रीतिरस्तु ॥ ॥

28

三

कोमारी पूजा

ही पूर्वोक्तिका नीज नूनैर्नैर्निता कालराशीरुवानी श्रीयूरी कृद्वि काखा नवनव कधिया श्रीसिद्धिलक्ष्मीयनां रासाना
 खा यवाखा हि रुवनऊननी वाऊ वाऊ ध्वनी च उता साभक नूया वि यून वि ऊयनी नो मिथवां कुमात्री ॥ म॥ ॥
 राम लु च लु नूया यु कठि न द ग ना धा न दं कु क नाली मोडी निमा सि द द द लिन निख निखा काल कनी नि न ग्रा देया
 नी मूलु माला रु नि ग ल म नि रि श्रु ति रि कू वि ना मी ख द्वा मी दृष्ट द स्ता य स नि म म त्रि यू च चि का थ न स स्का ॥ अग वलि
 मुनि ॥ ॥ सर्व म कु ल मा कु ल्य त्यादि ॥ त्वं गति सर्व रु न त्यादि ॥ यु नम ॥ ॥ ज जा च क कु म रु मि का व स्तु त्यादि न
 र्पदा ॥ ॥ न कान क त्यादि द वानी वी दं ॥ ॥ अश्व यू व ग न मि त्यादि ॥ स्व आ गी वी दं ॥ ॥ नं ज कि नि २ वि च्च का रु ना
 ये रु ४ अ म्ना य रु द् ॥ वलि वि स र्ज नं ॥ ॥ व दू क वलि र्थं र्था रु ॥ ॥ ग ल य नि का र्था रु ॥ ॥ अग वलि रा जा स रु
 ॥ ॥ ति शी य धि म ऊ वृ आ म्ना य को मा त्री अर्च न वि धि ४ स मा य ४ ॥ ॥ सर्व रु ४ ४ २ यो य शु क अष्टमी शु क वा त थ
 कू दू वं ता गृ ह नि वा सि क शी रु वानी ग कृ त स्य यू र्ग श्री गौ त्री ग कृ त ल थ को मा त्री यू जा आ दि न चा या रु त्रा शु क
 अ शु क य वि न यि नि श्च रु मा ॥ श्री ३ को मा त्री यी ति त रु ॥ ॥

४

२५